**सीबीएसई कक्षा-10 हिंदी 'ब'**

**टेस्ट पेपर-04**

**पाठ-03 दोहे-बिहारी**

---

**निर्देश -**

1. **सभी प्रश्न अनिवार्य है।**
2. **प्रश्न 1 से 8 तीन अंक के है।**
3. **प्रश्न 9 से 10 पांच अंक के है।**

---

1. बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
   सौंह करैं भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ॥
2. कहलाने एकत बसत अहि मयूर, मृग बाघ।
   जगतु तपोवन सौ कियौ दीरघ दाघ निदाघ।।
3. सच्चे मन में राम बसते हैँ दोहे के संदर्भानुसार स्पष्ट कीजिये ?
4. बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन तन माँह।
   देखि दुपहरी जेठ की छाँहौं चाहति छाँह॥
5. कागद पर लिखत न बनत, कहत सँदेसु लजात।
   कहिहै सबु तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात।
6. प्रगट भए द्विजराज कुल, सुबस बसे ब्रज आइ।
   मेरे हरौ कलेस सब, केसव केसवराइ॥
7. जपमाला, छापैं, तिलक सरै न एकौ कामु।
   मन काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु॥
8. सोहत ओढ़ैं पीतु पटु स्याम, सलौनैं गात।
   मनौ नीलमनि सैल पर आतपु परयौ प्रभात॥
9. कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
   भरे भौन मैं करत हैं नैननु हीं सब बात॥
10. छाया कब छांव ढूंढती है ?

**सीबीएसई कक्षा-10 हिंदी 'ब'**

**टेस्ट पेपर-04**

**पाठ-03 दोहे-बिहारी ( आदर्श उत्तर )**

1. इस दोहे में कवि ने गोपियों द्वारा कृष्ण की बाँसुरी चुराए जाने का वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि गोपियों ने कृष्ण की मुरली इस लिए छुपा दी है ताकि इसी बहाने उन्हें कृष्ण से बातें करने का मौका मिल जाए। साथ में गोपियाँ कृष्ण के सामने नखरे भी दिखा रही हैं। वे अपनी भौंहों से तो कसमें खा रही हैं लेकिन उनके मुंह से ना ही निकलता है।
2. कवि इस दोहे में भरी दोपहरी में गर्मी से बेहाल जंगली जानवरों की हालत का चित्रण किया है। भीषण गर्मी से परेशान जानवर एक ही स्थान पर बैठे हैं। सदा एक-दूसरे से लड़ने वाले जानवर जैसे मोर और सांप, हिरण और बाघ एक साथ बैठे हैं। कवि को लगता है कि गर्मी के कारण जंगल किसी तपोवन की तरह हो गया है। जैसे तपोवन में विभिन्न इंसान आपसी द्वेष को भुलाकर एक साथ बैठते हैं, उसी तरह गर्मी से बेहाल ये पशु भी आपसी द्वेष को भुलाकर एक साथ बैठे हैं।
3. बिहारी कहते हैँ कि राम अर्थात प्रभु उन लोगों के मन में बसतें हैँ जिनकी भक्ति सच्ची होती है |जापमाला, छापा, तिलक आदि बाहरी दिखावा करने वालों को कुछ प्राप्त नहीं होता ।
4. कवि कहते है की जेठ मास की दोपहर में ऐसा प्रतीत होता है मानो छाया भी अत्यंत घने जंगलों में जाकर बैठ गयी है, गर्मी से बचने के लिए वह भवन रूपी शरीर के अंदर प्रवेश कर गयी है जैसे जेठ की गर्म दोपहरी को देखकर वह भी छाँव चाहने लगी है ।
5. कवि ने उस नायिका की मन की स्थिति का वर्णन किया है जो अपने प्रेमी के लिए संदेश भेजना चाहती है। नायिका को इतना लम्बा संदेश भेजना है कि वह कागज पर समा नहीं पाएगा। लेकिन अपने संदेशवाहक के सामने उसे वह सब कहने में लाज भी आ रही है। इसलिए नायिका संदेशवाहक से कहती है कि तुम मेरे अत्यंत करीबी हो इसलिए अपने मन से तुम मेरे दिल की बात कह देना वे समझ लेंगे ।
6. कवि का कहना है कि श्रीकृष्ण ने स्वयं ही ब्रज में चंद्र वंश में जन्म लिया था अर्थात अवतार लिया था। बिहारी के पिता का नाम केसवराय था। इसलिए वे कहते हैं कि हे! कृष्ण आप तो मेरे पिता तुल्य हैं इसलिए मेरे सारे कष्ट को दूर कीजिए।
7. आडम्बर, ढोंग और दिखावा किसी काम के नहीं होते हैं। मन तो काँच की तरह क्षण भंगुर होता है जो व्यर्थ में ही नाचता रहता है। माला जपने से, माथे पर तिलक लगाने से या हजार बार राम राम लिखने से कुछ नहीं होता है। इन सब के बदले यदि सच्चे मन से प्रभु की आराधना की जाए तो वह ज्यादा सार्थक होता है।
8. इस दोहे में कवि ने कृष्ण के साँवले शरीर की सुंदरता का बखान किया है। कवि का कहना है कि कृष्ण के साँवले शरीर पर पीला वस्त्र ऐसी शोभा दे रहा है, जैसे नीलमणि पहाड़ पर सुबह के सूरज की किरणें पड़ रही हैं।
9. जहाँ सच्चा प्रेम होता है वहीं प्रेमी और प्रेमिका का ह्रदय एक हो जाता है| किसी को भी अपने मन की भावनाएं मुंह से बोलकर व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं पड़ती | प्रेमी युगल बिना कुछ कहे ही एक- दूसरे के मन की प्रेम- भावनाएं समझ लेता है| बिहारी की नायिका को भी यह विश्वास है कि उसका प्रेमी भी उसके मन की बात समझ लेगा और उसकी आँखों के इशारों से ही उसके प्रेम की भावनाओं को पढ़ लेगा |
10. जेठ की दोपहरी में जब सूरज बिलकुल सर के ऊपर आ जाता है तो छाया सिकुड़कर वस्तुओं के नीचे दुबक जाती हैँ । छाया भी मानो छांव के लिए तरसने लगती है इसलिए वह घने जंगलों को अपना घर बनाकर उसी में प्रवेश कर जाती है और दोपहर में बाहर नहीं निकलती ।